HISTORY, B.A. II HONS. PAPER II

REIGN OF TERROR (आतंक का शासन)

किसी भी क्रांति के पश्चात, क्रांति से हुए परिवर्तनों को बनाए रखना अत्यंत कठिन होता है क्योंकि क्रांति विरोधी तत्व पुनः पूर्व स्थिति लाने का प्रयास करते हैं। फ्रांस की क्रांति के पश्चात भी यह स्थिति थी। फ्रांस में न केवल आंतरिक समस्यायें थीं वरन् बाह्य संकट भी उस समय छाया हुआ था। विदेशी सेनाएँ फ्रांस की सीमा पर खड़ी थीं जो कभी भी आक्रमण कर सकती थीं। फ्रांस के राजतंत्र समर्थक आस्ट्रिया की सहायता से फ्रांस में पुनः राजतंत्र की स्थापना करना चाहते थे। इन परिस्थितियों में "आतंक के शासन' की स्थापना की गयी। आतंक के शासन का उद्देश्य फ्रांस में शान्ति एवं सुव्यवस्था स्थापित करने के साथ ही विदेशी आक्रमणों से फ्रांस की रक्षा करना था। इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए राष्ट्रीय सम्मेलन ने आतंक तथा हिंसा का रास्ता अपनाया जिसके द्वारा क्रांति विरोधी लोगों को मौत के घाट उतार दिया गया। इस प्रकार आतंक एवं हिंसा के इस शासन को "आतंक का शासन" (Reign of Terror) कहा जाता है।

आतंक का शासन कब प्रारम्भ हुआ यह कहना कठिन है, फिर भी क्रांतिकारी न्यायालय की स्थापना से राब्सपीयर की मृत्यु तक के शासन को 'आतंक के शासन का काल' माना जा सकता है। इस तरह आतंक का शासन 9 मार्च 1793 ई० से 28 जुलाई, 1794 ई० तक रहा।

आतंक का शासन स्थापित करने के कारण:-

आतंक के शासन की स्थिति पर प्रकाश डालते हुए दांतों ने कहा था, "क्रांति दो पाटों के बीच में है— घर में भी शत्रु हैं, सीमा पर भी शत्रु हैं।" अतः क्रांति के समर्थकों का विचार था कि जो भी क्रांति अथवा उसके सिद्धांतों का विरोध करता है उसका विनाश कर देना चाहिए। इन्हीं उद्देश्यों को लेकर फ्रांस में आतंक के शासन की स्थापना की गयी। आतंक का शासन स्थापित किये जाने के निम्नलिखित कारण थे:-

(i) आंतरिक समस्याएँ:- फ्रांस की आंतरिक स्थिति बहुत खराब थी। राजतंत्र समर्थक निरंतर षडयन्त्र करके फ्रांस में पुनः राजतंत्र की स्थापना करना चाहते थे। जिरोंदिन एवं जैकोबिन दलों में पारस्परिक संघर्ष चल रहा था। इसी समय ब्रिटेनी तथा लावेण्डी नामक प्रान्तों में विद्रोह हो गया। इन विद्रोहों के साथ ही फ्रांस के विभिन्न भागों में विद्रोह होने लगे। इन विद्रोहों को दबाने के लिए शक्तिशाली सरकार की आवश्यकता थी। अतः आतंक के शासन की स्थापना की गयी।

(ii) विदेशी आक्रमण:- राजतंत्र के समर्थक देश फ्रांस के विरोधी हो गये तथा शक्ति के द्वारा फ्रांस में पुनः राजतंत्र की स्थापना करना चाहते थे। इसी उद्देश्य से इंग्लैण्ड के प्रधानमंत्री छोटे पिट ने फ्रांस के विरुद्ध प्रथम संगठन (First Coalition) बनाया जिसमें इंगलैण्ड के अतिरिक्त आस्ट्रिया, प्रशा, स्पेन, हालैण्ड इत्यादि थे। इस संगठन ने आक्रमण करके बेल्जियम, राइन प्रदेश, सेवाय, नाइस आदि प्रदेशों पर अधिकार कर लिया। ऐसे में फ्रांस का

अस्तित्व खतरे में था। अतः फ्रांस की सुरक्षा के लिए 'आतंक का शासन' प्रारम्भ किया गया ताकि सेना को सुसंगठित किया जा सके। आतंक का शासन स्थापित करके कार्नो (Carnot) को युद्ध मन्त्री बनाया, जिसने सेना को सुसंगठित किया एवं फ्रांस के गौरव को बचाया।

(iii) लुई XVI को मृत्यु-दण्ड :- 21 जनवरी 1793 ई० को लुई सोलहवाँ को गिलोटिन पर चढ़ा कर मृत्युदण्ड दिया गया। लुई XVI को मृत्यु-दण्ड देने से देश के अन्दर और बाहर राष्ट्रीय सम्मेलन के बहुत से शत्रु हो गये। अतः इस स्थिति का सामना करने के लिए एक शक्तिशाली सरकार का होना आवश्यक था। अतः दांतों व जैकोबिन दल के अन्य नेताओं ने आतंक के राज्य की स्थापना की।

(iv) जैकोबिन दल का शक्ति में आना :- फ्रांस की क्रांति के पश्चात् कुछ लोगों का यह मानना था कि फ्रांस में गणतंत्र की स्थापना होनी चाहिये। दुर्भाग्यवश ऐसे लोग दो दलों में विभक्त हो गये जिन्हें जिरोंदिन एवं जैकोबिन कहा जाता था। जैकोबिन दल हिंसा में विश्वास रखता था। राष्ट्रीय सम्मेलन में यद्यपि जिरोंदिन दल के सदस्यों की संख्या अधिक थी किन्तु जैकोबिन दल का सर्वसाधारण पर अच्छा प्रभाव था। 31 मई 1793 ई० को जैकोबिन दल ने राष्ट्रीय सम्मेलन पर अधिकार कर लिया तथा जिरोंदिन दल के प्रमुख नेताओं को बंदी बना लिया। इस प्रकार फ्रांस पर जैकोबिन दल का प्रभुत्व स्थापित हो गया। जैकोबिन दल हिंसा में विश्वास रखते थे, अतः उन्होंने आतंक का शासन प्रारम्भ कर दिया। 'ग्रोट एण्ड टेम्परले' ने इस विषय में लिखा है, "आतंक का राज्य, जो अगस्त, 1792 ई० में प्रारम्भ हुआ था, जिरोंदिनों के पतन से चरम सीमा पर पहुँच गया।

आतंक-राज्य की स्थापना :-

31 मई 1793 ई० को जैकोबिनों ने राष्ट्रीय सम्मेलन (National Convention) पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया। इस प्रकार फ्रांस में जैकोबिन दल का शासन प्रारम्भ हुआ। जैकोबिन दल के प्रमुख नेताओं में दांतों, राबसपीयर, सेंट जस्ट तथा कार्नो थे। इन नेताओं का विचार था कि फ्रांस में व्याप्त अशांति, दुराचार व अव्यवस्था को समाप्त करने के लिए एक सशक्त शाली सरकार की स्थापना किया जाना आवश्यक था। अतः सरकार को शक्तिशाली बनाने के लिए अनेक कदम उठाए गये, जिनके परिणामस्वरूप फ्रांस में आतंक के शासन की स्थापना हुई, जिनके प्रमुख अंग निम्नवत् हैं :-

(i) लोक सुरक्षा समिति (Committee for Public Safety) :-

लोक सुरक्षा समिति की स्थापना आतंक का शासन प्रारम्भ किये जाने का मुख्य स्तम्भ थी। इस समिति को कार्यपालिका (Executive) व व्यवस्थापिका (Legislative) के असीमित अधिकार सौंपे गए। यद्यपि इस समिति का कार्य →

लोक सुरक्षा था, किन्तु इसने अपने अधिकारों का दुरुपयोग करते हु अत्यधिक अत्याचार किये। इसी कारण इस समिति को आतंक के राज्य की आत्मा कहा गया है। इस समिति में सदस्यों की संख्या 12 थी जिसमें राब्सपीयर एवं कार्नो प्रमुख थे।

(ii) सामान्य सुरक्षा समिति (Committee for General Safety) :-

सामान्य सुरक्षा समिति में 21 सदस्य थे। इस समिति का कार्य देश में सुरक्षा एवं शान्ति बनाए रखना था। इस समिति को भी व्यापक अधिकार प्राप्त थे। यह समिति किसी भी व्यक्ति को गिरफ्तार कर सकती थी। इसकी सुविधा के लिए 'लॉ ऑफ सस्पेक्ट' (Law of Suspects) बनाया गया था।

(iii) क्रांतिकारी न्यायालय (Revolutionary Tribunal) :-

मुकदमा चलाने एवं दण्डित करने के लिए पेरिस में क्रांतिकारी न्यायालय की स्थापना की गयी। शीघ्र ही सम्पूर्ण फ्रांस में ऐसे न्यायालय स्थापित हो गए। इन न्यायालयों में मुकदमों का दिखावा किया जाता था तथा अधिकांशतया अपराधी को मृत्युदण्ड ही प्रदान किया जाता था। इसी कारण राष्ट्रीय सम्मेलन के एक सदस्य ने इन न्यायालयों के विषय में कहा था, "कानून के नाम पर निर्दोष व्यक्तियों की हत्या करने के लिए, इन न्यायालयों को बनाया गया है।" इन न्यायालयों ने हजारों व्यक्तियों को मृत्युदण्ड प्रदान किया। मृत्युदण्ड फैसला सुनाने के कुछ ही घण्टों के पश्चात् दे दिया जाता था।

(iv) गिलोटिन (Guillotine) :- आतंक का राज्य स्थापित करने में गिलोटिन नामक यन्त्र ने भी अत्यधिक कुख्याति की। इस यन्त्र का आविष्कार डॉ० गिलोटिन ने किया था, अतः उसी के नाम पर इसे गिलोटिन कहा गया। इस यंत्र का प्रयोग मृत्युदण्ड देने के लिए किया जाता था। इस यन्त्र में दो स्तम्भों के बीच में एक तेज धार वाला ब्लेड लटका रहता था। जिनको मृत्युदण्ड देना होता था उसे दोनों स्तम्भों के बीच में लिटाकर उसकी गर्दन पर यह ब्लेड गिरा दिया जाता था जिससे उसकी गर्दन कट जाती थी। इस यंत्र के द्वारा मृत्युदण्ड सार्वजनिक स्थान पर दिया जाता था ताकि लोग आतंकित होकर क्रांति के विरुद्ध आवाज न उठायें।

(v) अन्य आतंकी कार्य (Other Terrorist Measures) :-

जैकोबिन दल ने जैकोबिन क्लब की स्थापना की जिसकी शाखाएँ अनेक नगरों में खोली गयीं। इसके सदस्य क्रांति विरोधी गतिविधियों पर नजर रखते थे तथा उनकी सूचना पर लोक रक्षा समिति कार्यवाही करती थी, तत्पश्चात् सन्देह के आधार पर गिरफ्तार व्यक्तियों को मृत्युदण्ड प्रदान किया जाता था।

.....Continue (जारी रहेगा) →